108 P
495
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1191/10/21
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 495

क्रान्ति का सँदेश

RECEIVED
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

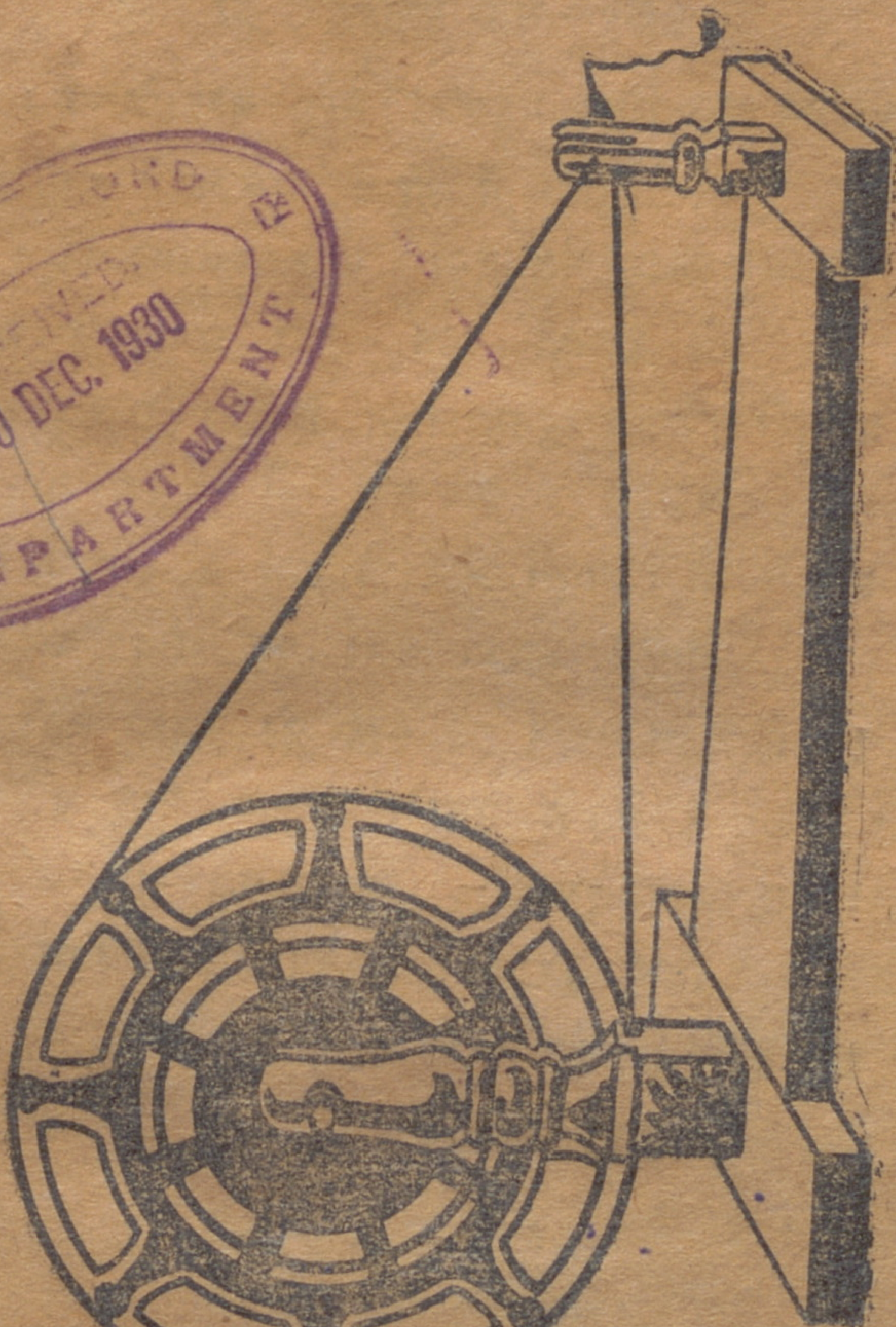

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—पं० बाबूराम शर्मा   मूल्य)

891.431
Sh23K

बन्देमातरम् नं १

(ले०—श्री० गणेशदत्त जी गौड़)

बोलिये सब मिल महाशय ! मन्त्र बन्देमातरम् ।
तीनों भुवनों में गूंज जाय शब्द बन्देमातरम् ॥
बन जाय कलमा यह हमारा मन्त्र बन्देमातरम् ।
हो हमारी पाठ पूजा मन्त्र बन्देमातरम् ॥
मन्दिरों मस्जिद, गुरुद्वारा या गिरजा हो यही ।
मज़हब बने बस हम सबों का एक बन्देमातरम्
हाथ में हों हथकड़ी और बेड़ियां हों पांव में ।
गायेंगे उनको बजा कर गीत बन्देमातरम् ॥
इस लिये धिक्कार है सौ बार जो कहता नहीं ।
हो प्रेम में उन्मत्त होकर मातृ बन्देमातरम् ॥
भारत हमारा देव मन्दिर और मस्जिद भी यही ।
हिन्दू मुसलमां हों उपासक देव बन्देमातरम् ॥
सब ही से यह बोलना प "इन्द्र" तुमको चाहिये ।
अल्लाहो अकबर जयति गांधी और बन्देमातरम् ॥

ग़ज़ल नं० २

हृदय की बेकली को कहो किस तरह मिटाऊँ ।
है आग जो लगी है कैसे इसे बुझाऊँ ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 495
Date 11:12.71
GOVT. OF INDIA

बच्चों पे कोड़ बाज़ी वह शर्मनाक मंज़र।

अपमान देवियोंका किस भांति भूल जाऊँ॥

जलियान बाग़ में जो भूने गये हज़ारों।

आंसू भी उनकी खातिर क्यूं कर न मैं बहाऊँ॥

वह आज्ञा भयानक गलियों में रेंगने की।

जो भूल जाय सबकुछ वो दिल कहांसे लाऊँ॥

जब लाखों भाई "अहकर" फ़ाक़ों से मर रहे हों।

युवराज आगमन की कैसे खुशी मनाऊँ॥

ग़ज़ल नं० २

गर तुझे चिन्तामणि की हो जवाहर लाल बन।

देखना आंधी का फल हो पाल का तो पाल बन॥

गर सुदर्शन चक्र धारी गांधी से बैर कर।

गालियं का देखना हो लुत्फ़ तो शिशुपाल बन॥

गर रिआया परवरी की दिल में कुछ हो आरज़ू।

तो बहादुर नेकदिल अकबर सा पृथ्वीपाल बन

दास आलम लाजपत आजाद किचलू सत्यदेव।

जां निसारे क़ौम श्रद्धानन्द मोती लाल बन॥

ज़िन्दगी निर्भर है "अहकर" जिस पै सारे देश की।

गाय की रक्षा अगर मंज़ूर हो गोपाल बन॥

मग़रबी तहज़ीब से जब तक शनासाई न थी ।
हिन्द में इफ़लास की काली घटा छाई न थी ॥
क्या बतायें मिल गया क्या सोहबते अग़यार से ।
वो मुसीबत आई सर है जो कभी आई न थी ॥
हाय वो दौलत कि जिसका कल न होता था शुमार ।
आज हमने ढूंढ कर देखा तो एक पाई न थी ॥
रोकता मक़तलमें तुमको किसकी जुर्रत थी मगर ।
आशिक़ों के क़त्ल में सरकार दानाई न थी ॥
बेख़बर ताक़त से 'अंकुर' हम थे अन्धे की तरह ।
सैरे दुनिया भी तमाशा था पै बीनाई न थी ॥

अपनी बीती

ले०—श्री अर्जुनलाल सेठी जैन ग़ज़ल नं० ५

न पूछो हमें हम सताये हुए हैं ।
सितमगर के फन्दे में आये हुए हैं ॥
हमारे ही घर में हमें हाथ में कर ।
हमारे हक़ों को दबाये हुए हैं ।
दिये टुकड़े जिनको रहम खा के हमने ।
वही हम से अब सिर उठाये हुए हैं ॥

दिया साथ जिनको हमेशा से हमने।
वो खुदगर्ज़ अहसां भुलाये हुए हैं॥
न ख़ौफे खुदा है न इन्सानियत कुछ।
तबाही वह शाही में लाये हुए हैं॥
तिलक भी नहीं आज हम में रहा हा!
नया दाग़ हम दिल पे खाये हुए हैं॥
न हमदर्द कोई न रहबर हमारा।
स्याह अब्र भारत में छाये हुए हैं॥
खुदाया मदद हिन्द कीजियो तू।
विपत्ती हमें सब मिटाये हुए हैं॥

कोई दिन और

(ले० – 'ईश्वर') ग़ज़ल नं० ६

सैयाद बेकसों को सता ले कोई दिन और।
गुलशनमें अपनी धूम मचा ले कोई दिन और।
कुछ दिन में दिन अपने चमनके भी फिरेंगे।
बुलबुल को बे बसी के हैं नाले कोई दिन और॥
हो जायगा कुछ दिन में बाग़ो बाग़ाब अपना।
इस जाल में चिड़ियों को फंसा ले कोई दिन और॥
ज़ालिम तेरे हाथों में बगैं हिना हूं मैं।
इस खूने दिल से हाथ रचा ले कोई दिन और॥

(६)

ज़िन्दा किसे अज़ल ने छोड़ा जहान में।
आख़िर मिटेगा तू भी मिटा ले कोई दिन और॥

गज़ल नं० ७

हमें उनकी तिरछी नज़र देखना है।
ये ढाती हैं क्या क्या क़हर देखना है॥
उधर देखना है सफाई निगाह की।
इधर आज़माइश जिगर देखना है॥
उधर हाथ क़ातिलके हों खून से तर।
इधर लाखों मक़तल में सर देखना है॥
तड़पते ज़मीं पर पड़े हों हजारों।
हज़ारोंको बे बालों पर देखना है॥
ये सब कुछ हो बेदाद क़ातिल को लेकिन।
न पहुंचे ज़रा भी ज़रर देखना है॥
कभी अपनी जानिबसे उफ़ तक न निकले।
असहयोग का यह असर देखना है॥
क़दम यूं हो आगे बढ़ाया जो "अहक़र"।
तो फिर अपना आज़ाद घर देखना है॥
सुनी है बहुत हमने तारीफ अहक़र।
देहली है कैसा शहर देखना है॥

ग़ज़ल नं० ८

(लेखक—श्री बेनीमाधव तिवारी)

चर्ख़ ! अब कर न सितम हम सताये बैठे हैं।
ख़ून का घूंट पिये ग़म उठाये बैठे हैं॥
लौट देंगी तुझे एक रोज़ ये आहें जल्लाद।
ऐसे कितने न और दिल दुखाये बैठे हैं॥
शर्म आती नहीं बेशर्म ! तुझे हंस २ कर।
कहता हम भी तो मातम मनाये बैठे हैं॥
सख़्तियां तेरी फलक़ अब सही जाती हैं नहीं।
ख़्याल कर कब से यों गरदन झुकाये बैठे हैं॥
ढेर बारूद का है मुल्क ए मज़लूम बना।
जुल्म इक दिन तेरे आतिश छुआए बैठे हैं॥
अश्क बहते हैं तो सब भेद खुला जाता है।
दर्द दिल पहलू में अपना छिपाये बैठे हैं।
देखें दुनिया में हमारा भी कोई है कि नहीं।
बस इसी खोज में धूनी रमाये बैठे हैं॥
देखोगे यह नज़ारा कभी "बैनी माधो"।
अपनी कुव्वत से ही गर ये हिलाए बैठे हैं॥

सत्याग्रह कैसे रुक सकता है

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमलमें लाकर दिखाना होगा।
प्रजा के आगे तुझे सितमगर! सर अपना अबतो झुकाना होगा
१. नशीली चीज़ें शराब, गांजा, अफ़ीम आदि जो बुद्धि हरतीं
मिटा के इनकी ख़रीद-बिक्री, दुकाने सारी उठाना होगा
२. हमारे सिक्के की दर को साहब! घटा बढ़ाकर जो लूटते हो
अब एक शिलिंग चार पेनी ही भाव उसका बनाना होगा
३. लगान आधा करो ज़मीं का, किसान जिससे ज़रा खुशी हों
महकमो इसका हमारी कौंसिल के ताबे तुमको रखाना होगा
४. फिजूल ख़र्ची बिला ज़रूरत, जो फ़ौज पर हो रही हमारी
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब! घटाना होगा
५. बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन डकारते हैं जो आला अफ़सर
उसे मुआफिक लगाना आधा, या उससे भी कम मराद्दा होगा
६. स्वदेशी कपड़े करे तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावे
विदेशी कपड़ों प और महसूल, ज्यादा तुम को लगाना होगा
७. समुद्र तट का जहाजी वाणिज, न हाथ में हो विदेशीयों के
उसे हमारे माहानों के आधीन रखकर चलाना होगा
८. जिन्हें कतल या कतल-इरादा, सजा मिली हो, उन्हें न छोड़े
बकाया कैदी पुलीटीकल सब, तुरन्त साहब! छुड़ाना होगा
जो एकसौ चौबिस ए का आर्टिकल है, उसे तो बिलकुल मिटाना होग

अठारह का पचास रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर
हमरे भाई जो निर्वासित हैं. उन्हें वतन में बुलाना होगा
१०। छिक। खुफिया-पुलिस उठादो'या रद्द उसको प्रजाके ताबे
११ हमें भी बन्दूक और पिस्तोल, बराए हिफाजत दिलाना होगा।

[स्वतन्त्र भारत का सिंहनाद" पुस्तक से उद्धृत]

राष्ट्रीय-गायन

मेरा रंगदे तिरंगा चोला- मेरा रंगदे तिरंगा चोला टेक
इसी रंग में शिवाजीने मां बन्धन खोला। मेरा रंगदे०
इसी रंग में यतीन्द्र नाथ ने तजा शरीर अनमोला॥ मेरा०
इसी रंग में लाला लाजपत स्वर्ग का फाटक खोला। मेरा०
इसी रंग में राणा प्रताप सिंह बन २ जंगल डोला॥ मेरा०
इसी रंग में अलीबन्धु के मारा पटेल ने टोला। मेरा०
इसी रंग में तैय्यब जीने आखिर जेल टटोला॥ मेरा०
इसी रंग में गांधी जीने नून पै धावा बोला। मेरा०
इसी रंग में बी० के० भगत सिंह भू रहस्य खोला। मेरा०
इसी रंग में मोती लाल जी सर्वस्व अपना बोला। मेरा०
इसी रंग में सरोजिनी नायडू तावन सर्वस्व घोला॥ मेरा०
इसी रंग में वीर जवाहर ने कंधे डाला झोला। मेरा०
इसी रंग में सत्यवती ने, हिन्दू ओं का हृदय खोला॥ मेरा
इसी रंग में इंद्रजी ने जीवन अपना तोला। मेरा०
इसी रंग में श्रद्धानंद ने गोली को सीना खोला। मेरा०

देशभक्तों की गर्जना

गिरफ्तारियों का असर देख लेना।
भरे अपने सबजेल घर देखलेना॥
डराता हमें जेलसे क्या तू जालिम।
डरेंगे नहीं ये समझ देख लेना॥
हथेली पे रक्खा है सर हमने अब तो।
चढ़ा देंगे एक दिन बली देख लेना॥
बढ़ा गा कदम आगे जो हमने गहरजि।
हटेगा न पीछे कभी देख लेना॥
भरो जेलखाने या गोली चलाओ।
टलेंगे ना सूली से भी देख लेना॥
कसर अपनी करनी में बाकी न छोड़ो।
चखा देंगे एक दिन मजा देख लेना॥
हुकम चाहते थे जरा गांधी जी का।
चढ़ा देंगे हम अपने सिर देख लेना
माथुर घड़ा पाप का भर रहा है।
न बैठेगा एक दिन तले देख लेना॥

पड़ गये

(ले०—रामचन्द्र शास्त्री) ग़ज़ल नं० १०

जब से हैं ग़ैरों के हाथों हिन्द वाले पड़ गये।
दम नहीं निकला मगर जीने के लाले पड़ गये॥
हो गये बरबाद जो थे ताजवाले आज सब।
हाथ में हथकड़ी और मुंह में ताले पड़ गये।
हाय डायर ने किये फायर न आई शर्म कुछ।
हाय हम बेदर्द गोरों के हवाले पड़ गये॥
सख़्तियां हम झेलते हैं अब सितम ईजाद की।
ज़ुल्म के शोले से दिल में अब तो छाले पड़ गये॥
आये जो मेहमान बनकर वो लगे करने सितम।
रोते हैं क़िस्मत को अपनी किसके पाले पड़ गये॥
चल रहा है फूटका दौरा हमारे हिन्द में।
किस बला में राम अब सब हिन्दवाले पड़ गये॥

आज़ाद करेंगे

ग़ज़ल नं० ११

हँस हंस के हमीं हिन्द की इमदाद करेंगे।
नाशाद बिरादर को हमीं शाद करेंगे॥

है ख़ौफ हमें मौत का मुतलक़ न जहां में।
फिर क्या वह सितम बानिये बेदाद करेंगे॥
मुंह बन्द किया, कैद किया, खून बहा था।
अब और सितम कौन सा ईजाद करेंगे॥
हाकिम हो वही और अदालत हो उसी की।
हम ऐसी न सरकार से फरियाद करेंगे॥
माफी न कभी आप से मांगेंगे जुबां से।
हम जेल को दिल खोल के आबाद करेंगे॥
पर याद रहे 'लाल' का कहना नहीं झूठा।
इक रोज हमीं हिन्द को आजाद करेंगे॥

'वर्तमान'

विदेशी सरकार नहीं रखनी

नहीं रखनी २ सरकार विदेशी नहीं रखनी॥ टेक॥

जलियां वाले बाग़ में जाकर दरवाजों पर मशीन लगाकर
मारे कई हजार भाइयों नहीं रखनी सरकार विदेशी नहीं०॥
अखबारों को बन्द कराकर सुभाषचन्द्र से बात पिटाकर।
गांधी भी किये गिरफ्तार भाइयो नहीं रखनी॥
जवाहर से योधा पिटवाए फिर उनको जेल भिजवाए।
ऐसी है मक्कार भाइयो नहीं रखनी सरकार विदेशी०॥

दत्त भगत को भूखा मारा जितेन्द्र भी स्वर्ग सिधारा
सभी को भूखा दीना मार भाइयो नहीं रखनी सरकार०

जब जर्मन की हुई लड़ाई, हमारे भाई दिये मरवाय।
ऐसी है बदकार जालिम नहीं रखनी सरकार विदेशी०॥

देखो कैसी करी सफाई, गांधी पकड़े रात में आई।
नौकरशाही का नहीं इतबार, भाइयो नहीं रखनी०॥

इन्द्र जी को पिंजरे पाया, सत्यवती को जेल भिजवाया।
ऐसी है मक्कार भाइयों नहीं रखनी सरकार विदेशी०॥

नमक कानून को जब तुड़वाया शंकरलाल को कैद करवाया
रमन जी भी किये गिरफ्तार, भाइयो नहीं रखनी सरकार०

आई थी व्यापार करन को जहांगीर की शरन रहन को।
बनी गले का हार भाइयो नहीं रखनी सरकार विदेशी०॥

इसकी लूट से बचा न कोई, बढ़ई चमार लुहार।
भाइयो नहीं रखनी सरकार विदेशी नहीं रखनी॥

गरीब किसान लगान लगाकर, भूख से दिये मार।
भाइयों नहीं रखनी सरकार विदेशी नहीं रखनी॥

गांधी के अब बनो सिपाही करो देश उद्धार।
भाइयो नहीं रखनी सरकार विदेशी नहीं रखनी॥

पेशावर के शहीदों का सन्देश

ज़ालिम हमारे ऊपर गोली चला रहे हैं।
हम तो शहीद होकर जन्नत को जा रहे हैं॥
पर याद तुम भी रखना ज़ालिम ये रह न जायें।
कुछ दिन में हम भी वापिस आ फेर आ रहे हैं॥
है जो हमारा हुकम है हम हिन्द के हैं मालिक।
इस हिन्द के लिये हम ये सर चढ़ा रहे हैं॥
लानत है यार उनको जो हैं गुलाम इनके।
कहने से दुश्मनों के छुरियाँ चला रहे हैं॥
ऐ भाइयो पुलिस के ऐ भाई फौज वालों।
हम तो तुम्हारे हक में इन्साफ चा रहे हैं।
यह धर्म है तुम्हारा तुम छोड़ दो गुलामी।
हम आपकी वजह से यें खूनमें नहा रहे हैं॥
यह आरजू हमारी तुम मर मिटो इसी पर।
आजाद होके रहना लो हम तो जा रहे हैं॥

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग जंग में पकडूंगी तलवार।
गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ, सारी पब्लिक को पहनाओ।
और मैं करूं सूत तय्यार॥ जंग में॥
ऊंच नीच सबको बतलाओ, गांधी का पैगाम सुनाओ॥
मैं भी करूं नमक तैयार॥ जंग में॥
जेल तोप से नहीं डरूंगी, बिना काल के नहीं मरूंगी॥

गोली खाने को तैयार ॥ जंग में ॥

भारत को आजाद करूंगी, दुश्मन को बरबाद करूंगी ॥
कुछमत सोच करो भरतार ॥ जंग में ॥

असहयोग की फौज सजाओ, कांग्रेस की तोप लगाओ ॥
दुश्मन भगें समन्द्र पार ॥ जंग में ॥

गांधी जी बन रहे कलन्दर, शशोपञ्ज में पड़ गये बन्दर ॥
देखो क्या करे करतार ॥ जंग में ॥

अब गांधी ने कदम बढ़ाया गवर्नमेंट का दिल दहलाया ॥
देवीं हो रही तैयार ॥ जंग में ॥

आजादी की छिड़ी जंग अब, सुनो सरोजिनी सत्यवती सब ॥
बहनो हो जाओ हुशियार ॥ जंग में ॥

यह रसिया गा २ के सुनावे, जोश जनानों को भी आवे ॥
वर्मा जी तैयार ॥ जंग में ॥

गजल नं १२

क़सम खुदाकी न अब कभीभी दिल अपना तुमसे लगायेंगे हम ।
जहां तलक हो सकेगा साहब ये रिश्ता तुम से छुड़ायेंगे हम ॥
वो ऊपरी बातें अब कभी भी न दिलको भायेंगी हो चुका बस ।
हजार लालच भी दोगे तो क्या न सर ी अपना उठायेंगे हम ॥
ये क्या ख़बर थी कि दिलमें घुसकर जिगरका मेरे लहू पियोगे ।
वो दाग़ भी आमने खुदा के हशर में तुझ को दिखायेंगे हम ॥
दे धोखा मासूम उन बुतों को जो करते हर दम यक़ीन तेरा ।
भ ग़ैर आखिर कहीं कभी भी तो इसका बदला चुकायेंगे हम ॥
अलहदा मबस दूर जा यहांसे नकर तू अब मीठी चुपड़ी बातें ।
ये तर्ज़ 'बेबस' पै जालिमाना न शक्ल देखें दिखायेंगे हम ॥

मंगाइये पढ़िये क्रांतिकारी पुस्तकें खरीदिये

हमारी प्रकाशित	राष्ट्रीय नाटक	राजनैतिक पुस्तकें
अंगरेजों का ख़्वाब	तेगे सितम ॥।)	पञ्जाब हत्या २॥)
(ज़ब्त हो गया)	देशोद्धार ॥।)	सर्वस्व समर्पण ३॥)
श्री शांतिदेवी की प्रतिज्ञा	हुब्बे वतन ॥)	मेज़िनी के लेख ३)
(सरकार द्वारा ज़ब्त)	हिन्द १)	फांसी १)
बहन सत्यवती का	देश दशा ॥,)	२१ बनाम ३० १॥)
सन्देश (ज़ब्त होगया)	भारतवर्ष ॥।)	शिवाजी चढ़ा ४)
अंगरेजी अक़ल गुम -)	कर्मवीर चराड ॥)	जन्म भूमि ३)
क्रांति गीताञ्जलि =)॥	सत्य विजय ॥।)	यतीन्द्र नाथदास १)
क्रांति की चिनगारियाँ ।)	भक्त विदुर ॥)	सेवा आश्रम २॥)
ज़ालिम सरकार ≈)	कबीरदास १)	उषाकाल दोनों
जलियानवाला बाग़ -)	श्रीमती मंजरी ॥।)	भाग ५)
झांसी की रानी -)	गौतम बुद्ध ॥।)	बहता हुआ फूल २॥)
गांधी की मशीनगन -)	कर्मयोगी ॥।)	रंगभूमि सम्पूर्ण ५)
भारत माता की	शाही फर्मान	दोज़ख़ की आग ॥।)
पुकार -)	दानवीर कर्ण ॥≈)	हवाई किला ॥।)
कौमी झगड़ा -)	गरीब किसान ॥।)	मास्टर साहब २॥)
लाहौर कांग्रेस का	दुखिया भारत ॥।	वेश्या पुत्र २॥)
बयान -)	परसराम ॥।)	दिल्ली का व्यभिचार १)
गांधी का तोपख़ाना -)	भारत दशा ॥।)	भारतीय वीर १)
आज़ादी के गीत -)	मदिरादेवी ॥=)	व्यास की कथा २॥)

पता—भारत बुक एजेंसी नई सड़क देहली।

मार्तण्ड प्रेस देहली में मुद्रित।